संत कबीर दास

SmitCreation.com

presents

॥ कबीर दास के ५१ दोहे अर्थ सहित ॥

संत कबीर दास

बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना,
मुझसे बुरा न कोय।

अर्थ : SmitCreation.com

जब मैं इस संसार में बुराई खोजने चला
तो मुझे कोई बुरा न मिला.
जब मैंने अपने मन में झाँक कर देखा
तो पाया कि मुझसे बुरा कोई नहीं है.

संत कबीर दास

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

अर्थ :

बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुँच गए, पर सभी विद्वान न हो सके. कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा.

SmitCreation.com

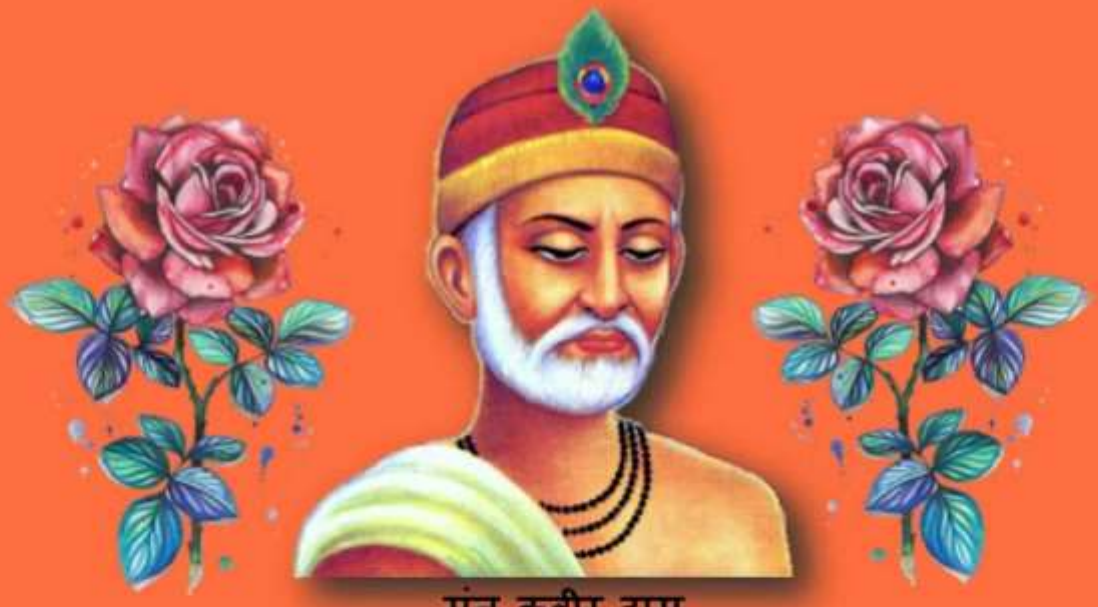

संत कबीर दास

साधु ऐसा चाहिए,
जैसा सूप सुभाय,
सार-सार को गहि रहै,
थोथा देई उड़ाय।

अर्थ : SmitCreation.com

इस संसार में ऐसे सज्जनों की जरूरत है, जैसे अनाज साफ़ करने वाला सूप होता है. जो सार्थक को बचा लेंगे और निरर्थक को उड़ा देंगे.

संत कबीर दास

तिनका कबहुँ ना निन्दिये, जो पाँवन तर होय, कबहुँ उड़ी आँखिन पड़े, तो पीर घनेरी होय।

अर्थ : कबीर कहते हैं कि एक छोटे से तिनके की भी कभी निंदा न करो जो तुम्हारे पांवों के नीचे दब जाता है. यदि कभी वह तिनका उड़कर आँख में आ गिरे तो कितनी गहरी पीड़ा होती है !

SmitCreation.com

संत कबीर दास

धीरे-धीरे रे मना,
धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा,
ऋतु आए फल होय।

अर्थ : SmitCreation.com

मन में धीरज रखने से सब कुछ होता है. अगर कोई माली किसी पेड़ को सौ घड़े पानी से सींचने लगे तब भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा !

संत कबीर दास

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर, कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

अर्थ : SmitCreation.com

कोई व्यक्ति लम्बे समय तक हाथ में लेकर मोती की माला तो घुमाता है, पर उसके मन का भाव नहीं बदलता, उसके मन की हलचल शांत नहीं होती. कबीर की ऐसे व्यक्ति को सलाह है कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन के मोतियों को बदलो या फेरो.

संत कबीर दास

जाति न पूछो साधु की,
पूछ लीजिये ज्ञान,
मोल करो तरवार का,
पड़ा रहन दो म्यान।

अर्थ : SmitCreation.com

सज्जन की जाति न पूछ कर
उसके ज्ञान को समझना चाहिए.
तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी
मयान का – उसे ढकने वाले खोल का.

संत कबीर दास

दोस पराए देखि करि,
चला हसन्त हसन्त,
अपने याद न आवई,
जिनका आदि न अंत।

अर्थ : SmitCreation.com
यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देख कर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते जिनका न आदि है न अंत.

संत कबीर दास

जिन खोजा तिन पाइया,
गहरे पानी पैठ,
मैं बपुरा बूडन डरा,
रहा किनारे बैठ।

अर्थ : SmitCreation.com

जो प्रयत्न करते हैं, वे कुछ न कुछ वैसे ही पा ही लेते हैं जैसे कोई मेहनत करने वाला गोताखोर गहरे पानी में जाता है और कुछ ले कर आता है. लेकिन कुछ बेचारे लोग ऐसे भी होते हैं जो डूबने के भय से किनारे पर ही बैठे रह जाते हैं और कुछ नहीं पाते.

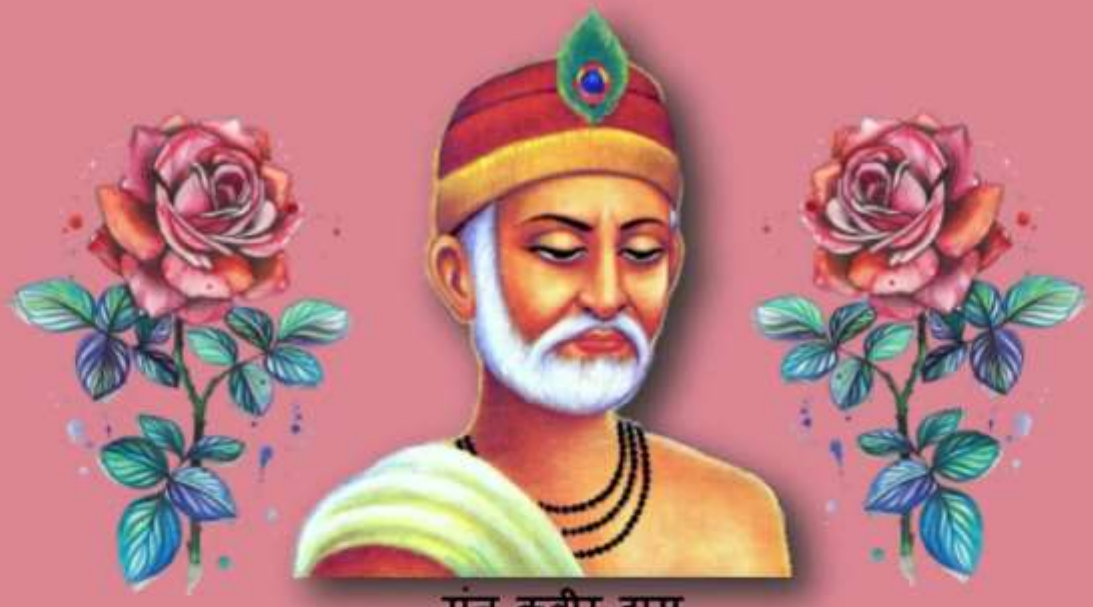

संत कबीर दास

बोली एक अनमोल है,
जो कोई बोलै जानि,
हिये तराजू तौलि के,
तब मुख बाहर आनि।

SmitCreation.com

अर्थ : यदि कोई सही तरीके से बोलना जानता है तो उसे पता है कि वाणी एक अमूल्य रत्न है। इसलिए वह ह्रदय के तराजू में तोलकर ही उसे मुंह से बाहर आने देता है.

संत कबीर दास

अति का भला न बोलना,
अति की भली न चूप,
अति का भला न बरसना,
अति की भली न धूप।

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜

न तो अधिक बोलना अच्छा है, न ही जरूरत से ज्यादा चुप रहना ही ठीक है. जैसे बहुत अधिक वर्षा भी अच्छी नहीं और बहुत अधिक धूप भी अच्छी नहीं है.

संत कबीर दास

हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना, आपस में दोउ लड़ी-लड़ी मुए, मरम न कोउ जाना।

अर्थ : SmitCreation.com
कबीर कहते हैं कि हिन्दू राम के भक्त हैं और तुर्क (मुस्लिम) को रहमान प्यारा है. इसी बात पर दोनों लड़-लड़ कर मौत के मुंह में जा पहुंचे, तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।

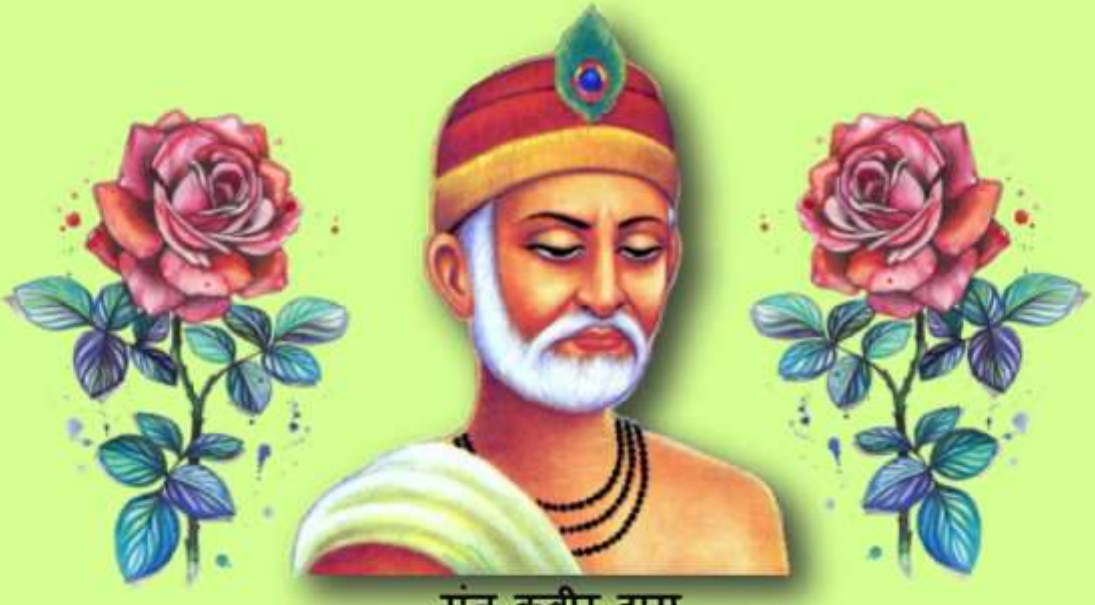

संत कबीर दास

निंदक नियरे राखिए,
ऑगन कुटी छवाय,
बिन पानी, साबुन बिना,
निर्मल करे सुभाय।

अर्थ :

जो हमारी निंदा करता है, उसे अपने अधिकाधिक पास ही रखना चाहिए। वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमियां बता कर हमारे स्वभाव को साफ़ करता है.

SmitCreation.com

संत कबीर दास

कबीर लहरि समंद की,
मोती बिखरे आई.
बगुला भेद न जानई,
हंसा चुनी-चुनी खाई.

अर्थ : SmitCreation.com

कबीर कहते हैं कि समुद्र की लहर में मोती आकर बिखर गए. बगुला उनका भेद नहीं जानता, परन्तु हंस उन्हें चुन-चुन कर खा रहा है. इसका अर्थ यह है कि किसी भी वस्तु का महत्व जानकार ही जानता है।

संत कबीर दास

कबीरा खड़ा बाज़ार में,
मांगे सबकी खैर,
ना काहू से दोस्ती,
न काहू से बैर.

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜
इस संसार में आकर कबीर अपने जीवन में बस यही चाहते हैं कि सबका भला हो और संसार में यदि किसी से दोस्ती नहीं तो दुश्मनी भी न हो !

संत कबीर दास

जब गुण को गाहक मिले,
तब गुण लाख बिकाई.
जब गुण को गाहक नहीं,
तब कौड़ी बदले जाई.

SmitCreation.com

अर्थ : कबीर कहते हैं कि जब गुण को परखने वाला गाहक मिल जाता है तो गुण की कीमत होती है. पर जब ऐसा गाहक नहीं मिलता, तब गुण कौड़ी के भाव चला जाता है.

संत कबीर दास

दुर्लभ मानुष जन्म है,
देह न बारम्बार,
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े,
बहुरि न लागे डार।

अर्थ : SmitCreation.com

इस संसार में मनुष्य का जन्म मुश्किल से मिलता है. यह मानव शरीर उसी तरह बार-बार नहीं मिलता जैसे वृक्ष से पत्ता झड़ जाए तो दोबारा डाल पर नहीं लगता.

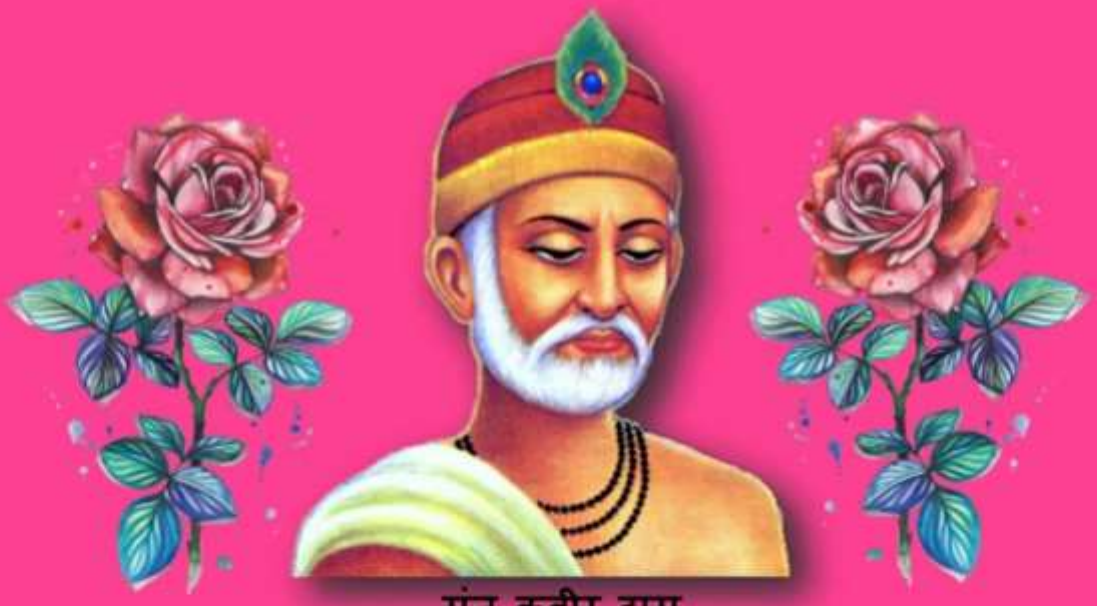

संत कबीर दास

कहत सुनत सब दिन गए,
उरझि न सुरझ्या मन.
कही कबीर चेत्या नहीं,
अजहूँ सो पहला दिन.

अर्थ :

कहते सुनते सब दिन निकल गए, पर यह मन उलझ कर न सुलझ पाया. कबीर कहते हैं कि अब भी यह मन होश में नहीं आता. आज भी इसकी अवस्था पहले दिन के समान ही है.

SmitCreation.com

संत कबीर दास

लूट सके तो लूट ले,
राम नाम की लूट ।
पाछे फिर पछ्ताओगे,
प्राण जाहि जब छूट ।।

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜

कबीर दस जी कहते हैं कि अभी राम नाम की लूट मची है , अभी तुम भगवान् का जितना नाम लेना चाहो ले लो नहीं तो समय निकल जाने पर, अर्थात मर जाने के बाद पछताओगे कि मैंने तब राम भगवान् की पूजा क्यों नहीं की।

संत कबीर दास

पानी केरा बुदबुदा,
अस मानुस की जात.
एक दिना छिप जाएगा,
ज्यों तारा परभात.

अर्थ : SmitCreation.com

कबीर का कथन है कि जैसे पानी के बुलबुले, इसी प्रकार मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है।जैसे प्रभात होते ही तारे छिप जाते हैं, वैसे ही ये देह भी एक दिन नष्ट हो जाएगी.

संत कबीर दास

जो उग्या सो अन्तबै,
फूल्या सो कुमलाहीं।
जो चिनिया सो ढही पड़े,
जो आया सो जाहीं।

अर्थ : SmitCreation.com

इस संसार का नियम यही है कि जो उदय हुआ है,वह अस्त होगा। जो विकसित हुआ है वह मुरझा जाएगा. जो छिना गया है वह गिर पड़ेगा और जो आया है वह जाएगा.

संत कबीर दास

कबीर तन पंछी भया,
जहां मन तहां उडी जाइ.
जो जैसी संगती कर,
सो तैसा ही फल पाइ.

अर्थ : SmitCreation.com

कबीर कहते हैं कि संसारी व्यक्ति का शरीर पक्षी बन गया है और जहां उसका मन होता है, शरीर उड़कर वहीं पहुँच जाता है। सच है कि जो जैसा साथ करता है, वह वैसा ही फल पाता है.

संत कबीर दास

संत ना छाडै संतई,
जो कोटिक मिले असंत
चन्दन भुवंगा बैठिया,
तऊ सीतलता न तजंत।

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜

सज्जन को चाहे करोड़ों दुष्ट पुरुष मिलें फिर भी वह अपने भले स्वभाव को नहीं छोड़ता. चन्दन के पेड़ से सांप लिपटे रहते हैं, पर वह अपनी शीतलता नहीं छोड़ता.

संत कबीर दास

ऐसा कोई ना मिले,
हमको दे उपदेस.
भौ सागर में डूबता,
कर गहि काढै केस.

अर्थ :

कबीर संसारी जनों के लिए दुखित होते हुए कहते हैं कि इन्हें कोई ऐसा पथप्रदर्शक न मिला जो उपदेश देता और संसार सागर में डूबते हुए इन प्राणियों को अपने हाथों से केश पकड़ कर निकाल लेता.

SmitCreation.com

संत कबीर दास

झूठे सुख को सुख कहे,
मानत है मन मोद.
खलक चबैना काल का,
कुछ मुंह में कुछ गोद.

अर्थ : SmitCreation.com

कबीर कहते हैं कि अरे जीव ! तू झूठे सुख को सुख कहता है और मन में प्रसन्न होता है? देख यह सारा संसार मृत्यु के लिए उस भोजन के समान है, जो कुछ तो उसके मुंह में है और कुछ गोद में खाने के लिए रखा है.

SmitCreation.com

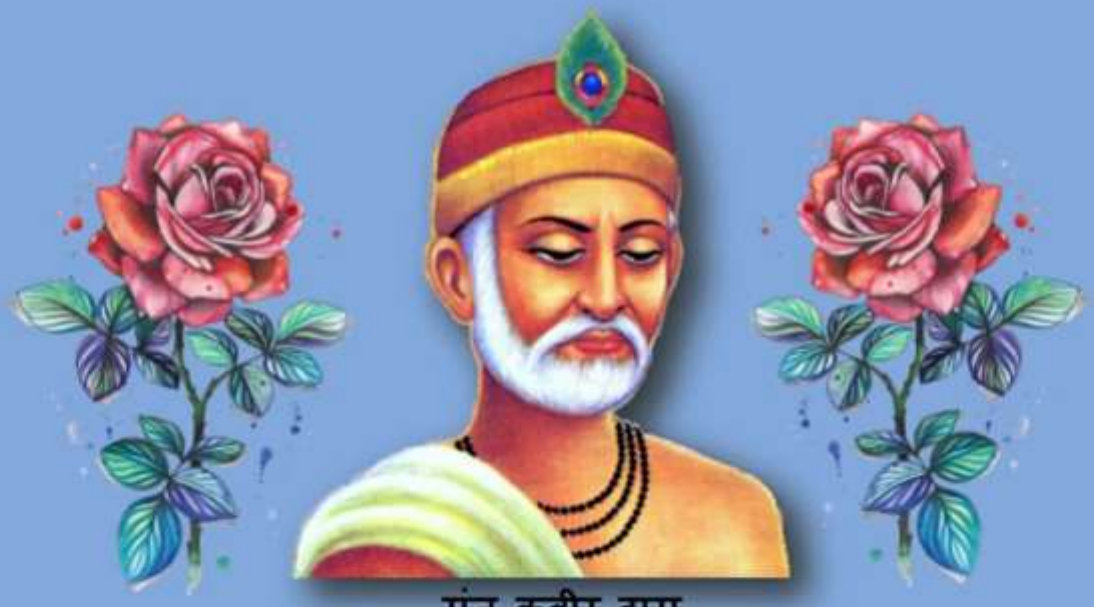

संत कबीर दास

तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜

शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

संत कबीर दास

कबीर सो धन संचे,
जो आगे को होय.
सीस चढ़ाए पोटली,
ले जात न देख्यो कोय.

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜
कबीर कहते हैं कि उस धन को इकट्ठा करो जो भविष्य में काम आए. सर पर धन की गठरी बाँध कर ले जाते तो किसी को नहीं देखा.

संत कबीर दास

माया मुई न मन मुआ,
मरी मरी गया सरीर.
आसा त्रिसना न मुई,
यों कही गए कबीर.

अर्थ : कबीर कहते हैं कि संसार में रहते हुए न माया मरती है न मन. शरीर न जाने कितनी बार मर चुका पर मनुष्य की आशा और तृष्णा कभी नहीं मरती, कबीर ऐसा कई बार कह चुके हैं.

SmitCreation.com

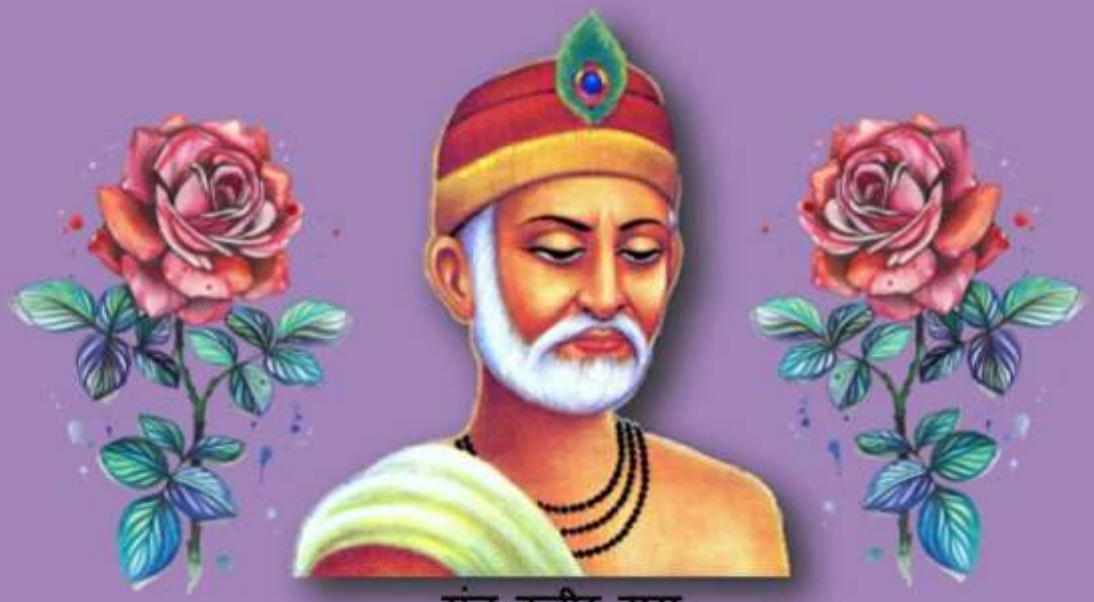

संत कबीर दास

मन हीं मनोरथ छांड़ी दे,
तेरा किया न होई.
पानी में घिव निकसे,
तो रूखा खाए न कोई.

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜

मनुष्य मात्र को समझाते हुए कबीर कहते हैं कि मन की इच्छाएं छोड़ दो, उन्हें तुम अपने बूते पर पूर्ण नहीं कर सकते। यदि पानी से घी निकल आए, तो रूखी रोटी कोई न खाएगा.

संत कबीर दास

दुःख में सुमिरन सब करे
सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे
दुःख काहे को होय ॥

अर्थ : SmitCreation.com

कबीर दास जी कहते हैं कि दुःख के समय सभी भगवान् को याद करते हैं पर सुख में कोई नहीं करता। यदि सुख में भी भगवान् को याद किया जाए तो दुःख हो ही क्यों !

संत कबीर दास

साईं इतना दीजिये,
जा मे कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ,
साधु ना भूखा जाय ।।

अर्थ : SmitCreation.com

कबीर दस जी कहते हैं कि परमात्मा तुम मुझे इतना दो कि जिसमे बस मेरा गुजरा चल जाये, मैं खुद भी अपना पेट पाल सकूँ और आने वाले मेहमानो को भी भोजन करा सकूँ।

संत कबीर दास

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब ।
पल में प्रलय होएगी,
बहुरि करेगा कब ॥

SmitCreation.com

अर्थ :

कबीर दास जी समय की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जो कल करना है उसे आज करो और और जो आज करना है उसे अभी करो, कुछ ही समय में जीवन ख़त्म हो जायेगा फिर तुम क्या कर पाओगे !!

SmitCreation.com

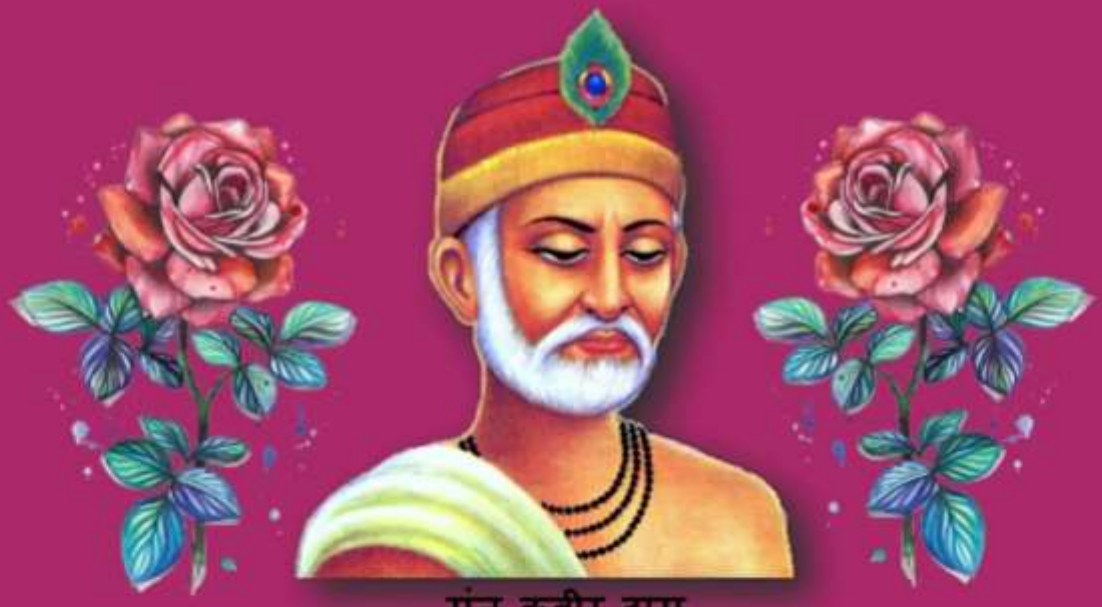

संत कबीर दास

भगती बिगाड़ी कामिया,
इन्द्री करे सवादी |
हीरा खोया हाथ थाई,
जनम गवाया बाड़ी ||

SmitCreation.com

अर्थ : इच्छाओं और आकाँक्षाओं में डूबे लोगों ने भक्ति को बिगाड़ कर केवल इन्द्रियों की संतुष्टि को लक्ष्य मान लिया है। इन लोगों ने इस मनुष्य जीवन का दुरूपयोग किया है, जैसे कोई हीरा खो दे।

संत कबीर दास

बड़ा हुआ तो क्या हुआ
जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नही
फल लागे अति दूर ॥

अर्थ : SmitCreation.com

खजूर का पेड़ न तो राही को छाया देता है, और न ही उसका फल आसानी से पाया जा सकता है। इसी तरह, उस शक्ति का कोई महत्व नहीं है, जो दूसरों के काम नहीं आ सकती।

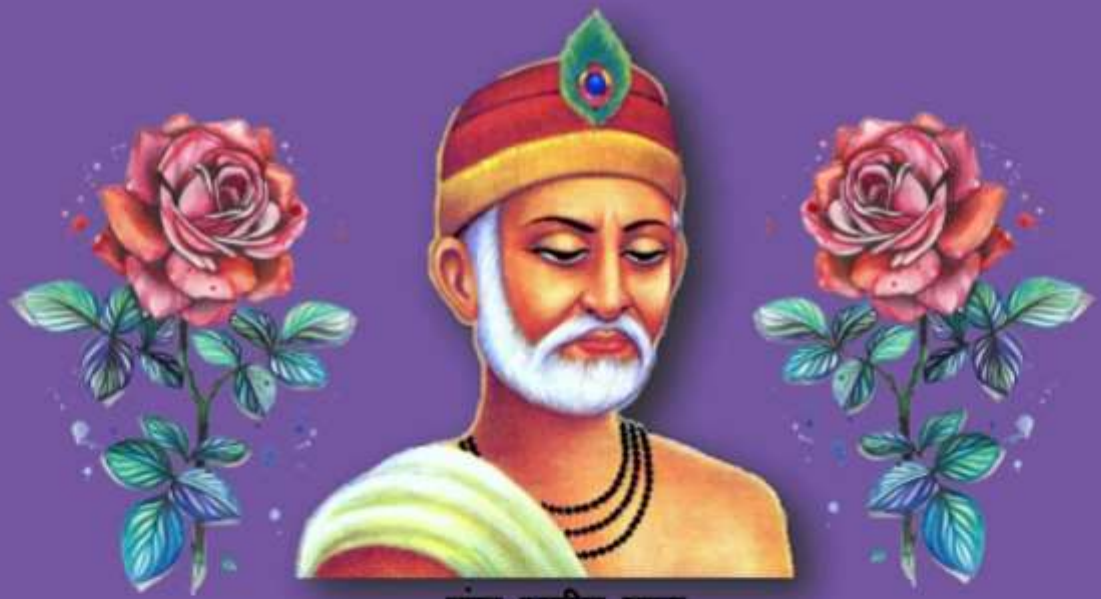

संत कबीर दास

माँगन मरण समान है,
मति माँगो कोई भीख ।
माँगन ते मारना भला,
यह सतगुरु की सीख ॥

अर्थ : SmitCreation.com

माँगना मरने के बराबर है ,इसलिए किसी से भीख मत मांगो . सतगुरु कहते हैं कि मांगने से मर जाना बेहतर है , अर्थात पुरुषार्थ से स्वयं चीजों को प्राप्त करो , उसे किसी से मांगो मत।

संत कबीर दास

आछे दिन पाछे गए,
हरि से किया न हेत ।
अब पछताए होत क्या,
चिड़िया चुग गयी खेत ।।

अर्थ :

सुख के समय में भगवान् का स्मरण नहीं किया, तो अब पछताने का क्या फ़ायदा।जब खेत पर ध्यान देना चाहिए था, तब तो दिया नहीं, अब अगर चिड़िया सारे बीज खा चुकी हैं, तो खेद से क्या होगा।

SmitCreation.com

संत कबीर दास

आपा तजे हरि भजे,
नख सिख तजे विकार ।
सब जीवन से निर्भैर रहे,
साधू मता है सार ।।

SmitCreation.com

अर्थ : जो व्यक्ति अपने अहम् को छोड़कर, भगवान् कि उपासना करता है, अपने दोषों को त्याग देता है, और किसी जीव-जंतु से बैर नहीं रखता, वह व्यक्ति साधू के सामान और बुद्धिमान होता है।

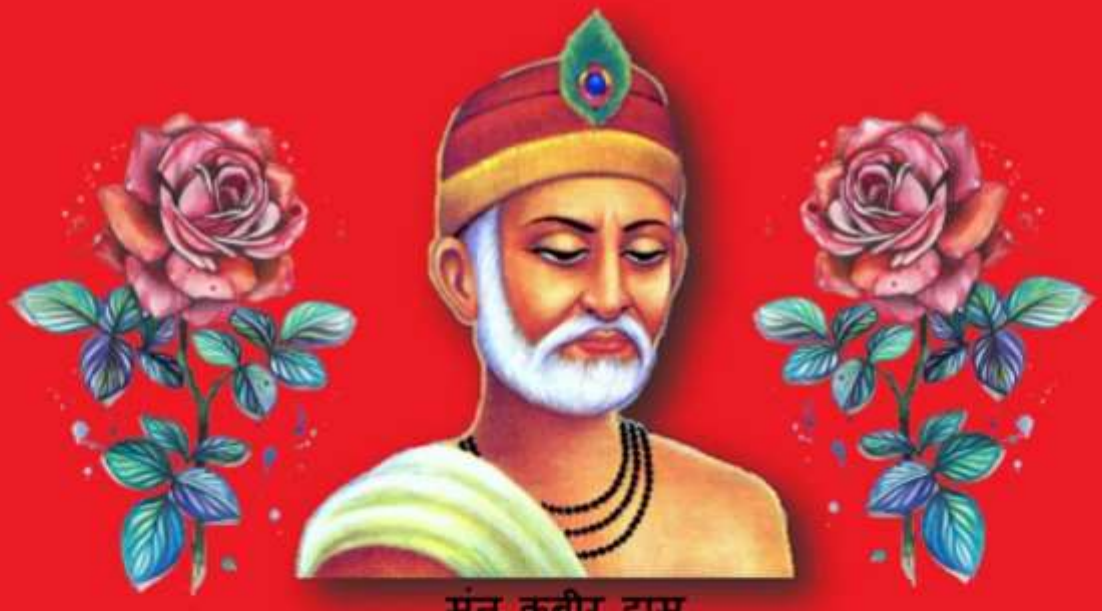

संत कबीर दास

आवत गारी एक है,
उलटन होय अनेक ।
कह कबीर नहिं उलटिये,
वही एक की एक ॥

अर्थ : SmitCreation.com

अगर गाली के जवाब में गाली दी जाए, तो गालियों की संख्या एक से बढ़कर अनेक हो जाती है। कबीर कहते हैं कि यदि गाली को पलटा न जाय, गाली का जवाब गाली से न दिया जाय, तो वह गाली एक ही रहेगी ।

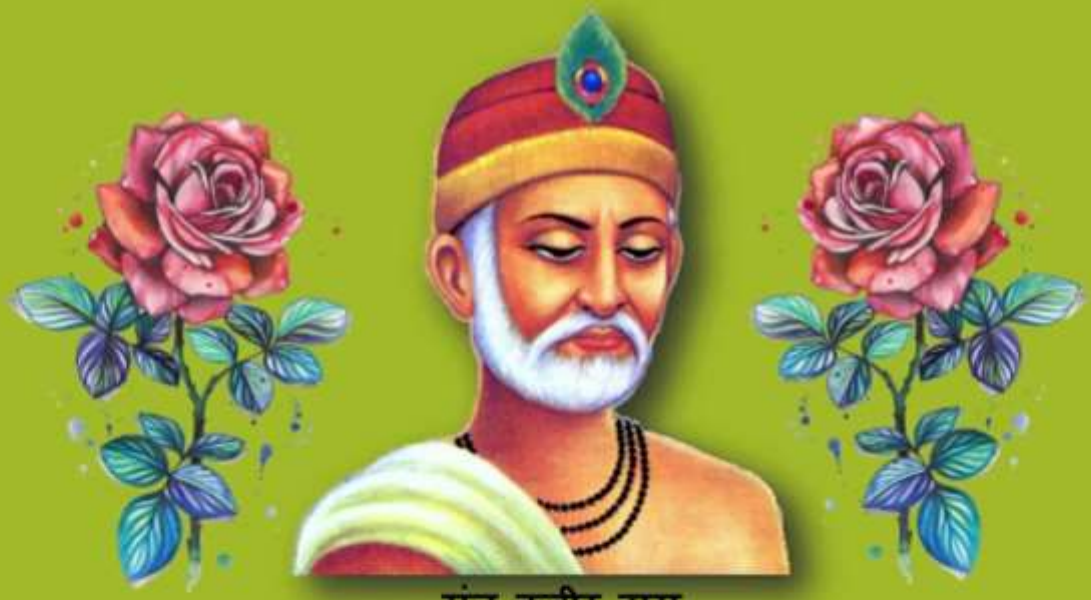

संत कबीर दास

बाहर क्या दिखलाये,
अंतर जपिए राम |
कहा काज संसार से,
तुझे धानी से काम ||

अर्थ : SmitCreation.com

बाहरी दिखावे कि जगह, मन ही मन में राम का नाम जपना चाहिए। संसार कि चिंता छोड़कर, संसार चलाने वाले पर ध्यान देना चाहिए।

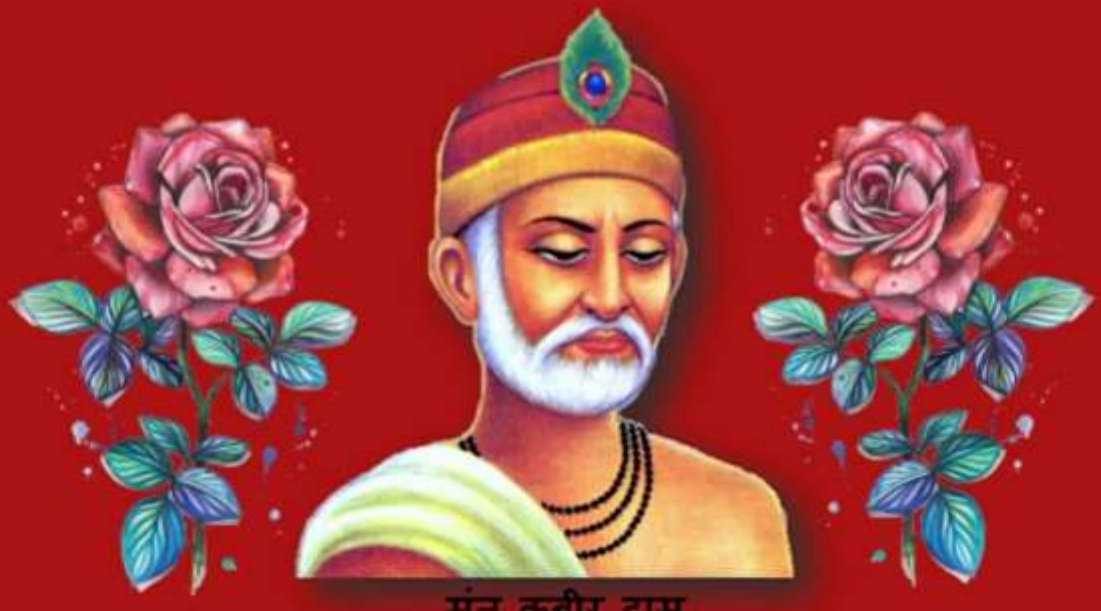

संत कबीर दास

एसी वाणी बोलिए,
मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे,
आपहु शीतल होय ॥

अर्थ : ⚜SmitCreation.com⚜
अगर अपने भाषा से अहं को हटा दिया जाए, तो दूसरों के साथ खुद को भी शान्ति मिलती है।

संत कबीर दास

बूँद पड़ी जो समुंदर में,
जानत है सब कोय ।
समुंदर समाना बूँद में,
बूझै बिरला कोय ।।

अर्थ : SmitCreation.com

एक बूँद का सागर में समाना - यह समझना आसान है लेकिन सागर का बूँद में समाना - इसकी कल्पना करना बहुत कठिन है। इसी तरह, सिर्फ भक्त भगवान् में लीन नहीं होते, कभी-कभी भगवान् भी भक्त में समा सकते हैं।

संत कबीर दास

चली जो पुतली लौन की, थाह सिंधु का लेन । आपहू गली पानी भई, उलटी काहे को बैन ।।

SmitCreation.com

अर्थ : जब नमक सागर की गहराई मापने गया, तो खुद ही उस खारे पानी मे मिल गया। इस उदाहरण से कबीर भगवान् की विशालता को दर्शाते हैं। जब कोई सच्ची आस्था से भगवान् खोजता है, तो वह खुद ही उसमे समा जाता है।

संत कबीर दास

गुरु गोविंद दोनों खड़े,
काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपनो,
गोविंद दियो मिलाय ।।

अर्थ : SmitCreation.com

यदि गुरु और ईश्वर, दोनों साथ में खड़े हों, तो किसे पहले प्रणाम करना चाहिए? कबीर कहते हैं, गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर है,क्योंकि गुरु की शिक्षा के कारण ही भगवान् के दर्शन होते हैं।

संत कबीर दास

चिड़िया चोंच भरि ले गई,
घट्यो न नदी को नीर ।
दान दिये धन ना घटे,
कहि गये दास कबीर ॥

अर्थ : SmitCreation.com

जिस तरह चिड़िया के चोंच भर पानी ले जाने से नदी के जल में कोई कमी नहीं आती, उसी तरह जरूरतमंद को दान देने से किसी के धन में कोई कमी नहीं आती।

संत कबीर दास

चिंता ऐसी डाकिनी,
काट कलेजा खाए ।
वैद बेचारा क्या करे,
कहा तक दवा लगाए ।।

अर्थ : SmitCreation.com

चिंता एक ऐसी चोर है जो सेहत चुरा लेती है। चिंता और व्याकुलता से पीड़ित व्यक्ति का कोई इलाज नहीं कर सकता।

संत कबीर दास

दया भाव ह्रदय नहीं,
ज्ञान थके बेहद |
ते नर नरक ही जायेंगे,
सुनी सुनी साखी शब्द ||

अर्थ : SmitCreation.com

कुछ लोगों में न दया होती है और न हमदर्दी, मगर वे दूसरों को उपदेश देने में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति, और उनका निरर्थक ज्ञान नर्क को प्राप्त होता है।

संत कबीर दास

जग में बैरी कोई नहीं,
जो मन शीतल होय |
यह आपा तो डाल दे,
दया करे सब कोए ||

SmitCreation.com

अर्थ : आपके मन में यदि शीतलता है, अर्थात दया और सहानुभूति है, तो संसार में आपकी किसी से शत्रुता नहीं हो सकती। इसलिए अपने अहंकार को निकाल बाहर करें, और आप अपने प्रति दूसरों में भी समवेदना पाएंगे।

संत कबीर दास

जहाँ दया तहाँ धर्म है,
जहाँ लोभ तहाँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है,
जहाँ क्षमा तहाँ आप ॥

अर्थ : SmitCreation.com

जहाँ दया-भाव है, वहाँ धर्म-व्यवहार होता है।
जहाँ लालच और क्रोध है वहाँ पाप बसता है।
जहाँ क्षमा और सहानुभूति होती है,
वहाँ भगवान् रहते हैं।

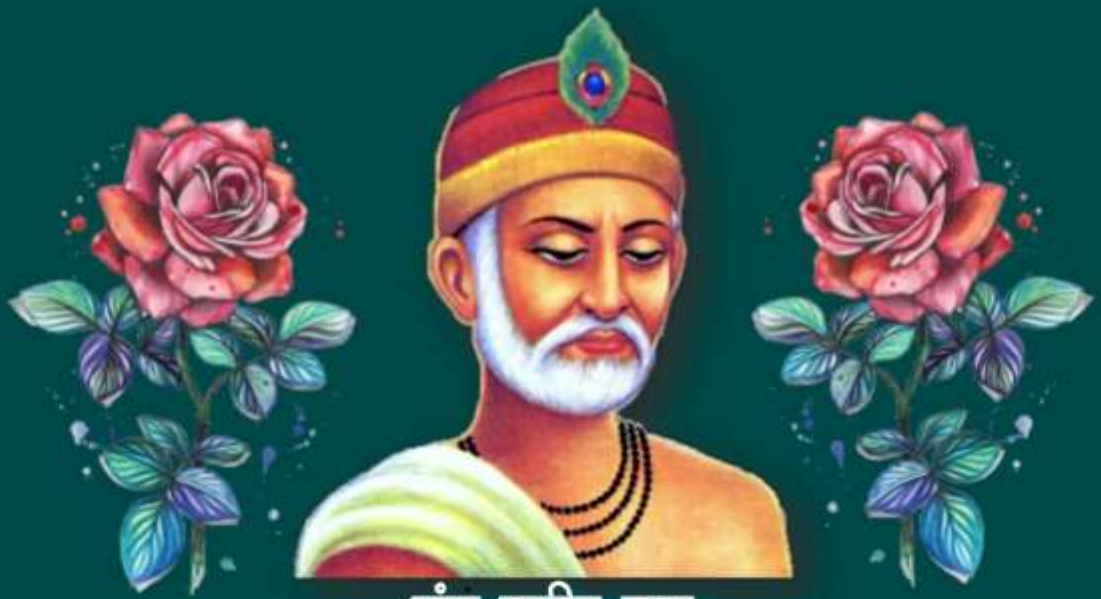

संत कबीर दास

हरि रस पीया जानिये,
कबहू न जाए खुमार ।
मैमता घूमत फिरे,
नाही तन की सार ।।

अर्थ : SmitCreation.com

जिस व्यक्ति ने परमात्मा के अमृत को चख लिया हो, वह सारा समय उसी नशे में मस्त रहता है। उसे न अपने शरीर कि, न ही रूप और भेष कि चिंता रहती है।

संत कबीर दास

जहाँ न जाको गुन लहै,
तहाँ न ताको ठाँव ।
धोबी बसके क्या करे,
दीगम्बर के गाँव ॥

SmitCreation.com

अर्थ : जहाँ पर आपकी योग्यता और गुणों का प्रयोग नहीं होता, वहाँ आपका रहना बेकार है। उदाहरण के लिए, ऐसी जगह धोबी का क्या काम, जहाँ पर लोगों के पास पहनने को कपड़े नहीं हैं।

संत कबीर दास

जैसा भोजन खाइये,
तैसा ही मन होय ।
जैसा पानी पीजिये,
तैसी वाणी होय ॥

अर्थ : SmitCreation.com

शुद्ध-सात्विक आहार तथा पवित्र जल से मन और वाणी पवित्र होते हैं। अर्थात, जो जैसी संगति करता है वैसा ही बन जाता है।